CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 20th Nov. 2020, Revised on 27th Nov. 2020, Accepted 14th Dec. 2020

शोध पत्र

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धिमता के प्रभाव का अध्ययन

* **रचना बडोलिया**, *शोधार्थी*
कैरियर पॉइंट विश्वविद्यालय कोटा
अरशी अब्बासी, *विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय*
माँ भारती पी. जी. कॉलेज, कोटा
Email- chetanyamalav76@gmail.com, Mob.- 9468627821

मुख्य शब्द : *सांवेगिक बुद्धि, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कार्यकुशलता आदि.*

सारांश

अध्यापक राष्ट्र के भावी कर्णधार होते है। विद्यार्थी के शारीरिक मानसिक, नैतिक आदि सभी प्रकार के निर्माण व विकास का उत्तरदायित्व अध्यापक पर होता है।

प्रस्तुत शोध में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षकों की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। व्यक्ति की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धि का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है तथा शिक्षा के आधुनिक मनोविज्ञान में भी सांवेगिक बुद्धि का प्रमुख स्थान है क्योंकि संवेग हमारे सभी कार्यो को गति प्रदान करते है तथा संवेगात्मक बुद्धि स्वंय व दूसरों की भावनाओं को समझने व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है। व्यंक्ति अपनी भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से अच्छी तरह से संवाद कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के कोटा शहर के प्रशिक्षण महा. के प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है तथा मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग करके परिणामो के द्वारा विभिन्न आयामों का प्रतिशत 55.78% तथा 57.91 प्राप्त हुआ। अतः निष्कर्षतः शोध क्षैत्र के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धि का प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षैत्र में विगत कुछ समय से विद्वानो के द्वारा ''संवेगात्मक बुद्धि'' नामक एक नवीन सम्प्रत्यय की चर्चा की जा रही है। किसी घटना के प्रति जीव की प्रतिक्रियाओं को संवेग कहा जाता है। प्रेम, खुशी, प्यार, आश्चर्य स्नेह, मित्रता जैसे सकारात्मक संवेग व्यक्ति को वाछंनीय क्रियाएं करने के लिए प्रेरित करते हैं जबकि क्रोध, भय घृणा, दुख जैसे नकारात्मक संवेग व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से अवांछनीय क्रियाएं करने की ओर अग्रसर करते है।

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार क्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरो के संवेगो को जानने, समझने तथा उसका सर्वोत्तम प्रबंधन करने में उसकी सहायता करती है।

संवेगात्मक बुद्धि नामक पद का प्रतिपादन सर्वप्रथम मेयर व सेलोवे (1997) ने किया। उनके अनुसार ''चिंतन को सुगम बनाने हेतु संवेगो के प्रत्यक्षन अवबोध प्रबंधन व प्रयोग की योग्यता ही संवेगात्मक बुद्धि है।'' यह सामाजिक बुद्धि का एक समुच्चय होता है। जिसमें स्वंय तथा अन्य की भावनाओं और संवेगो को नियंत्रित करने पृथक करने और निर्देशित करने की क्षमता निहित होती है। सांवेगिक बुद्धि में संवेगो के प्रत्यक्षीकरण करने संवेगो के प्रति पहुँच बनाने एवं उसे उत्पन्न करने की क्षमता शामिल होती है जिससे की चिंतन में सहायता हो सके, संवेगो को समझा जा सके तथा उसे चिंतनशील तरीके से नियमित किया जा सके। बॉर ऑन का विचार है कि संवेगात्मक–सामाजिक, बुद्धि स्वंय को समझने, अपने सबल और दुर्बल पक्ष को जानने तथा अपनी भावनाओं व चिंतन को गैर–हानिप्रद रूप में व्यक्त करने की अन्तः वैयक्तिक योग्यता पर आधारित है।

डेनियल गोलमेंन (1998) ''यह अपने एवं दूसरो के भावो को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करने एवं अपने तथा अपने सबंधो में संवेग को प्रतिबन्धित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक बुद्धि या बुद्धि लब्धि द्वारा मापे जाने वाले पूर्णतः संज्ञानात्मक क्षमताओं से भिन्न परंतु उसके पूरक होते है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सांवेगिक बुद्धि सामाजिक बुद्धि का एक प्रकार है यह संवेगो एवं उनके कारणो को समझने की योग्यता है तथा सबसे महत्वपूर्ण यह है कि यह समस्या हल करने के लिए सूचना का स्त्रोत सृजनात्मक एवं सामाजिक स्थितियों से निपटने के लिए प्रयुक्त करने योग्य है। किसी व्यक्ति को उतना ही संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान माना जाता है।

1. जितना कि क्षमता और योग्यता वह निम्न रूपो में प्रदर्शित करता है।
   - अपने स्वंय के संवेगो की सही जानकारी।
   - दूसरे की शारीरिक भाषा, मुख मुदा, बोलने के अंदाज द्वारा संवेगो को पहचानना।
   - दूसरो के संवेगो को पहचानकर अपनी विचार प्रक्रिया में शामिल करना।
   - संवेगो की अभिवृत्ति तथा उस पर नियंत्रण कर सकना तथा उन्हे अपने स्वंय के तथा दूसरो के हित, चिंतन, आपसी मेलजोल तथा भाईचारे हेतु प्रयोग में लाने की क्षमता।

गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि के पांच आयामो का उल्लेख किया है।

2. जिनका कार्य जगत की परिस्थितियों में मानव व्यवहार को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ये आयाम है –

   स्वजागरूकता/आत्मजागरूकता

   यह सांवेगिक बुद्धि का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इसमें व्यक्ति अपने भावो एवं संवेगो से जिस रूप में वे उत्पन्न होते है, अवगत होता है।

   आत्म प्रबंधन

   यह सांवेगिक बुद्धि का दूसरा तत्व है जिसका तात्पर्य है किसी कार्य विशेष में अवरोध के स्थान पर स्थिरता लाने की दृष्टि से अपने संवेगो पर नियंत्रण रख सकना, नकारात्मक संवेगो से विरक्त हो सकना तथा समस्या समाधान के उद्देष्य से एक रचनात्मक मार्ग अपना सकना।

आत्म अभिप्रेरणा

वांछित लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना नकारात्मक आवेगी वृत्तियों पर विजय प्राप्त करना तथा वांछित परिणाम की प्राप्ति हेतु अपने प्रलोभनो पर अंकुश लगा सकना इसकी मुख्य विशेषताएँ है। सांवेगिक बुद्धि का यह तत्व जीवन के सभी क्षेत्र में प्राप्त होने वाली सफलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

परानुभूति

परानुभूति के अंतर्गत व्यक्ति दूसरो के अभिप्रेरण एवं संवेगो को समझता है और उनकी प्र्याप्त पहचान करता है। अर्थात दूसरो की भावनाओं को समझना एवं उनके प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करना तथा यह अनुमान लगा सकना कि दूसरे लोग कैसा महसूसस करते है, एवं वे क्या चाहते है इस तत्व की विशेषता होती है।

सामाजिक दक्षताएँ

इसके अंतर्गत सामाजिक परिस्थितियों का भांप लेने, दूसरो के साथ आसानी से अन्तःक्रिया एवं संबंध जोड लेने, दूसरो के संवेगो तथा वे जिस प्रकार का व्यवहार करते है, उनके प्रति मार्गदर्शन कर सकने की क्षमता शामिल है।

कार्य कुशलता

किसी कार्य आदि में प्रवीण होने की अवस्था गुण या भाव कार्यकुशलता कहलाता है।

- **कार्यस्थल पर कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि का सबंध**

  कार्यस्थल पर आपकी सेहत और कार्यकुशलता का सीधा सबंध हो तथा साथ ही आपकी सांवेगिक बुद्धि भी आपकी कार्यकुशलता को प्रभावित करती है। भावात्मक बुद्धि व समझ से कार्यस्थल पर तीन प्रकार की मदद मिल सकती है।

  - कार्यस्थल पर सोहार्दपूर्ण माहौल बनाए रखने में।
  - आचरण, कार्यनिष्पादन क्षमता में सुधार लाने में।
  - संगठन की कार्यनिष्पादन क्षमता में सुधार लाने।

किसी भी कार्यस्थल पर वह कर्मचारी बेहतर माना जाता है जिसकी EQ (भावनात्मक उपलब्धि) उसकी IQ (बुद्धि उपलब्धि) से ज्यादा हो क्योंकि आज कार्यस्थल के नियमों में तेजी से बदलाव आ रहा है। लोगो को आंकने के लिए एक नया पैमाना प्रयोग किया जा रहा है, यह पैमाना यह नहीं तौलता कि आपकी शैक्षणिक योग्यता क्या है, या फिर आपकी विशेषता क्या है। बल्कि यह बताता है कि आपने कितनी कुशलता से खुद का ओर दूसरो का प्रबंधन किया है।गोलमैन के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति के लिए आशावादी व उत्साही बनाए रखती है। जिससे वह लंबे समय तक कार्य करने के लिए अभिप्रेरित होता है।

महेन्द्र मिश्रा (2006) ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति कार्यस्थल पर अधिक संतुष्ट, प्रसन्न व आशावादी रहते है। जिससे उनकी कार्य अभिप्रेरणा समारात्मक रू॰ से प्रभावित होती है।

ब्रान्ड यूनिवर्सिटी के मेनेजमेंट की एक प्रोफेसर सिंधिया फिशर ने 1997 में एक अध्ययन किया जिसका नाम था Emotions at work; what do people feel and how should we measure it?इनके शोध के अनुसार कार्यस्थलो में सबसे अधिक जिन नकारात्मक भावनाओं का अनुभव होता है। वह क्रोध, निराशा, घृणा, कुंठा, चिंता व्यवहार आदि है। ये वास्तव में बहुत दृढ भावनाएं है। सामान्य रूप से हमारे निर्णय लेने ओर कार्यकुशलता को अव्यवस्थित करने में भी सक्षम है। क्रोध जब नियंत्रण से बाहर हो तो वह न केवल आपके लिए बल्कि आपके सहकर्मियो के लिए भी विनाशकारी हो सकता है। कार्य स्थल पर इसे नियंत्रित करना बहुत जरूरी है। इसी प्रकार निराशा भी किसी कार्य की उत्पादकता को सबसे अधिक प्रभावित करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि कार्यस्थल पर सांवेगिक बुद्धि का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है इससे हमारी कार्यशीलता/कार्यकुशलता भी प्रभावित होती है। कार्यस्थल पर हम अपने संवेगो का नियंत्रण व समन्वय जितना अधिक करेंगे हमारी उत्पादकता उतनी ही बढ़ेगी।

अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धिमता के प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के विभिन्न आयामो में सार्थक अंतर नहीं है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के स्वजागरूकता आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के व्यवसायिक उन्नयन आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के स्वप्रबंधन आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के अंतरवैयक्तिक आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के कोटा जिले के कोटा शहर के शिक्षक प्रशिक्षण महा. के 200 प्रशिक्षको को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

शोध उपकरण

आंकड़ो के संग्रहण हेतु प्रमापीकृत डॉ. शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में चार आयामो को सम्मिलित किया गया है।

(a) स्वजागरूकता आयाम

(b) व्यावसायिक उन्नयन आयाम

(c) स्वप्रबंधन/अंन्तःवैयान्तिक आयाम

(d) अंतरवैयक्तिक आयाम

जिनमें प्रत्येक आयाम से संबंधित 200 प्रश्न है

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्धारित उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण परिणाम एवं व्याख्या

शिक्षक प्रशिक्षण महा. के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धि के विभिन्न आयामो का अध्ययन –

सारणी संख्या–1

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता स्तर
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (पुरूष)	60	557.84	12.86	9.875	0.05 के स्तर पर सार्थक
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (महिला)	120	579.17	15.12		

तालिका संख्या (1) के निरीक्षण से ज्ञात होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको का सांवेगिक बुद्धि के विभिन्न आयामो का मध्यमान क्रमशः 557.84 व 579.17 है साथ ही प्रमाप विचलन क्रमशः 12.86 व 15.12 है। इनसे प्राप्त ही मूल्य 9.875 है। जो स्वतंत्रता के अंश (df) 178 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीयन मान 1.97 से अधिक हैं। अतः शून्य परिकल्पना "शिक्षक प्रशिक्षक महा. के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता पर सांवेगिक बुद्धि के विभिन्न आयामो का सार्थक अंतर नहीं होता है।" अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् प्रशिक्षण महा. के पुरूष व महिला प्रशिक्षको की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर होता है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष प्रशिक्षको की तुलना में महिला प्रशिक्षको की सार्वगिंक बुद्धि विभिन्न आयामो में अधिक है।

सारणी संख्या–2

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के स्वजागरूकता आयाम का अध्ययन

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता स्तर
T TC (पुरूष)	60	202.67	16.98	3.71	0.05 के स्तर पर सार्थक
T TC (महिला)	120	212.92	18.52		

तालिका संख्या (2) केनिरीक्षण से ज्ञात होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महा. के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको का सांवेगिक बुद्धि के स्वजागरूकता आयाम का मध्यमान क्रमशः 202.67 व 212.92 है साथ ही प्रमाप विचलन क्रमशः 16.98 व 18.52 है। इनसे प्राप्त ही टी–मूल्य 3.71 है जो 0.05स्तर पर सारणीयन मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना "शिक्षक प्रशिक्षक महा. के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के स्वजागरूकता आयाम में सार्थक अंतर नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है अर्थात महिला व पुरूषो की स्वजागरूकता में सार्थक अंतर होता है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष की तुलना में महिलाओं की स्वजागरूकता अधिक होती है।

सारणी संख्या–3

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के व्यावसायिक उन्नयन आयाम का अध्ययन –

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता स्तर
T TC (पुरूष)	60	113.58	10.57	4.05	0.05 के स्तर पर सार्थक
T TC (महिला)	120	120.92	13.18		

तालिका संख्या (3)के निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष व महिला प्रशिक्षको का व्यवसायिक उन्नयन आयाम का मध्यमान क्रमशः 113.58 व 120.92 है। प्रमाप विचलन क्रमशः 10.57 व 13.18 है। इनसे प्राप्त टी–मूल्य 4.05 है। जो स्वतंत्रता के अंश (df)178 के लिए सार्थकता स्तर पर 0.05 पर सारणीयन मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना "शिक्षक प्रशिक्षक महा. के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के व्यवसायिक उन्नयन आयाम में सार्थक अंतर नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है अर्थात महिला प्रशिक्षको का व्यवसायिक उन्नयन आयाम का मध्यमान अधिक होता। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अपने व्यवसाय के प्रति अधिक जागरूकता व सामजंस्य रखती है।

सारणी संख्या–4

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के **स्वप्रबंधन आयाम** का अध्ययन

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता स्तर
T TC (पुरूष)	60	66.92	11.58	1.80	0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं
T TC (महिला)	120	70.00	9.22		

तालिका संख्या (4) के निरीक्षण में ज्ञात होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष व महिला प्रशिक्षको का मध्यमान क्रमशः 66.92 व 70.00 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 11.58 व 9.22 है। इनसे प्राप्त ही टी–मूल्य 1.80 है। जो स्वतंत्रता के अंश (df)178 के लिए सार्थकता स्तर पर 0.05 पर सारणीयन मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना "शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के स्वप्रबंधन आयाम में साथक अंतर नहीं होता है।" को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् पुरूष व महिला प्रशिक्षको का स्वप्रबंधन समान होता है। दोनों ही प्रशिक्षको में अपने संवेगो के प्रति सकारात्मकता दिखाई देती है। तथा साथ ही अपने मनोभावो का संचालन किस प्रकार किया जाना चाहिए, यह ज्ञात होता है।

सारणी संख्या–5

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षकों के लिए सांवेगिक बुद्धि के स्वप्रबंधन आयाम का अध्ययन

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता स्तर
T TC (पुरूष)	60	174.67	16.78	0.25	0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं
T TC (महिला)	120	175.33	17.31		

अंतरवैयक्तिक आयाम एक महत्वपूर्ण आयाम है। इस आयाम के परीक्षण हेतु शून्य परिकल्पना "शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको के लिए सांवेगिक बुद्धि के अंतरवैयक्तिक प्रबंधन आयाम में सार्थक अंतर नहीं होता है।" निर्मित की गई तथा प्रदत्तो का संकलन करने के पश्चात पुरूष तथा महिला प्रशिक्षको का मध्यमान क्रमशः 174.67 व 175.33 प्राप्त हुआ साथ ही प्रमाप विचलन क्रमशः 16.78 व 17.31 है। इनसे प्राप्त ही टी–मूल्य 0. 25 है। जो 0.05 स्तर के सारणीयन मान से कम है। अतः इस आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। तथा यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पुरूष व महिला प्रशिक्षंक दूसरो के प्रति अपने संबंधो का प्रबंधन करने में सक्षम होते है। तथा विपरीत परिस्थितियों में भी अपने संबंधो को बेहतर बनाने की योग्यता रखते है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के द्वारा विभिन्न आयामो से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है –

(1) महिला प्रशिक्षको की विभिन्न आयामो में सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है।

(2) महिला प्रशिक्षको का स्वजागरूकता आयाम व व्यवसायिक उन्नयन आयाम पुरूष प्रशिक्षको से अधिक होता हैं।

(3) महिला प्रशिक्षको व पुरूष प्रशिक्षको का स्वप्रबंधन व अंतरवैयक्तिक आयाम समान होता है।

अतः प्राप्त परिणामो के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वजागरूकता, स्वप्रबंधन अंतरवैयक्तिक व व्यवसायिक उन्नयन आयाम का प्रशिक्षको की सांवेगिक बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है। अतः समस्त आयामो की प्रशिक्षको को जानकारी दी जानी चाहिए जिससे वे स्वंय व दूसरो के संवेगो को समझ सके तथा निरंतर प्रगति की और अग्रसर हो सके।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का आधार तत्व होता है। जिस पर शिक्षा का ऐसा दायित्व है जो उसके अंदर कई योग्यताओं से समन्वित होने की आकांशा रखता है। जैसे ईमानदार, स्वजागरूक नेतृत्व क्षमता आदि गुणो को समाहित क करवह एक आदर्श शिक्षक बन सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। संवेगो का सही उपयोगी व प्रभावी ढंग में प्रबन्धन व नियंत्रण करने क योग्यता को संवेगात्मक बुद्धि कहा जाता है। क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति से सफलता की भावना तथा उसमें नेतृत्व क्षमता का विकास करती है। एक संवेगात्मक प्रबुद्ध शिक्षक शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण तभी निर्मित कर सकता है। जब वह स्वंय के साथ दूसरो को भी भावनात्मक रूप से समझेगा।

अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की यह सुझाव दिया जा सकता है। कि वे अपनी सांवेगिक बुद्धि को भली भांति समझकर कार्यस्थल पर अपनी कार्यकुशलता को प्रभावी बनाने हेतु प्रयासरत रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) पाठक पी.डी. – शिक्षा मनोविज्ञान

(2) सिंह अरूण – शिक्षा मनोविज्ञान

(3) भटनागर सुरेश – शिक्षा मनोविज्ञान

(4) मंगल एस के (2015) शिक्षा मनो. पी.एच. आई. पब्लिकेशन, दिल्ली

(5) गेलमेन डेनियल (1998) बर्किंग विद इमोशनल इंटेलीजेंस, बेटमैन बुक्स, न्यूयार्क

(6) www.htetexam2018.com

(7) Walker - study on EI of classroom teachers.

(8) Goleman.D. (1996) Emotional intelligence: why it can be matter more than IQ, New York; Bantom books.

(9) Buch M.B. (1978-83) Third survey of Education sereach, New Delhi, NCERT

(10) NCERT (1988-92) Fifth survey of Education Research New Delhi, NCERT Vol-II.

**** Corresponding Author***

रचना बडोलिया, *शोधार्थी*

कैरियर पॉइंट विश्वविद्यालय कोटा

अरशी अब्बासी, *विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय*

माँ भारती पी. जी. कॉलेज, कोटा

Email- chetanyamalav76@gmail.com, Mob.- 9468627821